धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

फरवरी 2008

- महोत्सव से लाभ
- माँ की छाया
- माता पिता के प्रति कृतज्ञता का अनुभव
- जीनव प्रसंग
- खून से रंगे हैं धर्मों के हाथ
- हमे ॥ फ्रंट फुट पर खेलो
- ुभ संग्राम

महोत्सव से लाभ

विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान जी, सत्यदेव की जय।

कुशलता के उपरान्त समाचार यह है कि कल महोत्सव के समापन पर यह महसूस हो रहा था कि इस बार महोत्सव मनाने की जो खुशी प्राप्त हुई उसको मैं लफ्जों में ब्यान नहीं कर सकता।

एक बार भाव प्रकाश करने को उठा, लेकिन सरताज सिंह जी स्टेज पर उस समय खड़े थे। उनके द्वारा किए गए भाव प्रकाश ने तो दिल को हिलाकर रख दिया, काफी देर तक तो अपने आप पर भी काबू नहीं पा सका, भावुक होकर पण्डाल से बाहर आ गया।

इस बार महोत्सव पर आकर बहुत लाभ उठाया। जितनी भी सभाएं सुनी, उन सब से बहुत अच्छे प्रभाव मिले, बहुत-बहुत सन्मान के योग्य श्रीमती सुरजीत बराड़ जी, विशेष सन्मान के योग्य श्रीमान खेड़ा जी बहुत-बहुत सन्मान के योग्य श्रीमान बलबहादुर जी अन्य सभी की सभाओं से बहुत अच्छे प्रभाव मिले। मेरी आपसे बिनती है कि इन सभी सभाओं को संक्षेप या विस्तार से जैसे आप उचित समझें **धर्म जीवन** और **हित स्त्रोत** में प्रकाशित करें और इनकी वीडियो टेप जरूर तैयार करवायें ताकि यह महोत्सव स्मरणीय बन जाये।

इस बार महोत्सव पर यह महसूस हुआ कि आप सब ने हमारे लिये बहुत संग्राम किया, रहने के लिए अच्छा प्रबन्ध, भोजन की व्यवस्था तथा अन्य सभी प्रकार की सेवायें पाई इन सब के लिए आप सब को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ और आप सब के लिए शुभकामना करता हूँ कि आप सब प्रकार से ठीक-ठाक (तन्दरुस्त) रहें। आप जियो हजारों साल साल, साल के दिन हो पचास हजार।

अब ध्यान अपनी ओर जाता है कि गुरू मिशन के साथ जुड़े हुए काफी अर्सा हो चुका है, जीवन में गुरु महाराज से जुड़कर काफी लाभ उठाया है, प्रतिदिन चारों जगतों के उपकार स्मरण करता हूँ। दादाजी, दादीजी, पिता जी तो परलोक सिधार गये हैं। उन सबके उपकार हर रोज याद आते हैं। गुण धारियों के गुणों का स्मरण करके दिल को बहुत तसल्ली मिलती है। अपनी कमियाँ गुरु महाराज की रोशनी में ही नज़र आती हैं। एक वलवला दिल में है कि इस जीवन में बहुत सेवायें दूसरों से पाई हैं, और अब मेरी भी एक duty बनती है कि बाकी जीवन में कुछ दूसरों के लिए भी सेवा का काम करूं। बहुत-बहुत धन्यवाद के साथ आपका आभारी और गुरु महाराज का तुच्छ सा सेवक।

जगजीत सिंह

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 2

फरवरी 2008

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

माँ की छाया

किसी कवि ने लिखा है कि माँ स्वर्ग की परछाईं होती है, उसकी छाया से स्वर्ग की रचना होती है। माँ के बिना तो स्वर्ग भी अन्धेर हो जाता है।

माँ इन्सान के लिए विशेषकर, और अन्य जीवों के लिए सधारणत: बरकतों की खान होती है, वह हितों की झड़ी लगा देती है। मेहरबानियों की घटा होती है। माँ की वर्तमानता सदा सुखों का स्त्रोत होता है। माँ की गोद का सुख दुनियां के और सुखों को मात कर देता है।

माँ की गोद में ही मानवता का निर्माण होता है। माँ का रूप ही मनुष्यता के न्ये रूप का सृजनहार है। माँ जैसे वरदान की नेचर में कल्पना करनी ही कठिन है।

इतनी बहुमूल्य सौगात मनुष्य को बिना मांगे ही मिल जाती है और मनुष्य उसकी बरकतों और नेयमतों को सूर्य और हवा की तरह ही लेता रहता है, पर जैसे मनुष्य को सूर्य की रोशनी वा हवा की कोई क़दर नहीं होती, उसी प्रकारी मुफ्त में मिली माँ की भी आम तौर पर कुछ क़दर नहीं होती, इसलिए बेक़दरे मनुष्य के हाथों माताओं पर अन्याय, सितम, जुल्म, अनादर वा सितम के दृष्य देखने में आते हैं।

जब माँ की कोख़ से जन्म और पालन पाकर, माँ की लोरियां से नींद के अगोश में जाने वाला, मां के द्वारा ही सजाया, धजाया मनुष्य माँ को ही भुला देता है उसको किसी गिणती में नहीं लाता, उसकी अवश्यकताओं, दुख सुख से लापरवाह हो जाता है, यहां ही बस नहीं, अपने स्वार्थ से अन्धा हो माँ के सुख चैन को लूट लेता है, मुँह से अपशब्दों की आग उगलने लगता है, माँ से कठोर व्यवहार करता है, तो इस धरती पर घिनौना नज़ारा जन्म लेता है। स्वर्ग जैसे मीठे सम्बन्ध की महक में भुचाल आ जाता है, बर्बता, कृतघ्नता, निदर्यता का नंगा नाच होने लगता है। इन भूतों की वर्तमानता स्वर्ग को भी भयानक नर्क में बदल देती है।

ज्यों - ज्यों मानवता माता के महान रूप की सोझी पाती जाएगी, त्यों - त्यों मनुष्य सभ्यता की सीढ़ियां चढ़ता जाएगा। मनुष्य सबसे सच्चे स्वर्ग का वारिस बनता जाएगा।

माँ के साथ अनबन अपने ही स्त्रोत से अनबन है। माँ के साथ दूरी अपने ही कर्ता के साथ दूरी है। माँ से झगड़ा अपने ही रचियता के साथ झगड़ा है। माँ को दुख, कष्ट और हानि पहुंचाना

अपनी हस्ती के सृजनकर्त्ता को, अपने वजूद के स्त्रोत को सूली पर चढ़ाना है। माँ का विरोध सिविल वार की तरह अपनों का अपनों के प्रति विरोध है। मां का अपराधी कभी सुखी नहीं रह सकता। माँ के सच्चे, गहरे सन्मान और माँ की पूजा भरी सेवा में स्वर्गिय सुखों का स्त्रोत फूटता है।

एक कालिज के विद्यार्थी ने विधवा मां से बूट लेने के लिए रुपये मांगे। उसने अपनी पहुंच अनुसार अधिक से अधिक रुपये दे दिए। परन्तु बेटे को वह कम लगे। उसने और मांगे परन्तु माँ ने असमर्थता प्रगट की। पुत्र गुस्से से पागल हो गया, माँ की छाती पर बैठकर लकड़ी से पीटने लगा और उसकी बाजू तोड़ दी।

एक मैजिस्ट्रेट पिता ने अपने पुत्र को अवारागर्दी के लिए टोका, उसको बहुत बुरा लगा वा गुस्से से भर गया। पिता ने बाद में रात को खाना खिलाया और बढ़िया आम दूध के साथ खिलाए। परन्तु पुत्र ने रात को पिता को गोली मार दी।

एक माँ ने अपने पुत्र को लम्बे बालों के प्रति अपनी नपसंदगी प्रगट की, पुत्र ने गोली मार कर मां को खत्म कर दिया।

एक गाँव में बिमारी फैल गई। माँ ने नौजवान बेटे को अपने भाई के साथ दूसरी जगह भेज दिया, माँ भूख प्यास और बिमारी से मर गई, अपने बेटों को बिमारी से बचा लिया, यह माँ का रूप है।

तीन भाईयों ने, जिनमें एक शादीशुदा था, माँ और अपनी पत्नी की टकराहट खत्म करने के लिए उपाय सोचा। पत्नी को मायके भेज दिया और तीनों भाई इधर-उधर चले गए, ताकि बूढ़ी माँ अपने आप ही भूख प्यास से मर जाएगी। परन्तु खुश किस्मती से एक को देवात्मा की धर्म संगत मिल गई, उसे अपनी गल्ती का एहसास हुआ और उसने अपनी माँ को बचा लिया।

यह कहावत है कि जाट की यदि कार्तिक के महीने माँ मर जाए तो वह बिजाई पहले करेगा और मां का फुरसत से दाहसंस्कार करेगा। मनुष्य की प्रकृति ही इतनी स्वार्थी है।

पत्नी का अनुचित पक्ष माताओं को अनाद्रित कर देता है और उनके सन्ताप का कारण बनता है और ऐसी घटनाएं घर-घर होती हैं।

जन्म दाता, पालनकर्ता, रक्षाकर्ता और घर की महारानी को पुत्रों, बहुओं और नौकरों से भी कम सत्कार मिलता है। ऐसी तरसनाक हालत पर मन भर आता है। परन्तु सन्मान रहित वा कृतघ्न पुत्रों को यह सब ठीक लगता है। जब पुत्रों द्वारा घर की मल्लिका को निराद्रित होना पड़ता है तो उसका समूचा अस्तित्व सुकड़ कर हड्डियों की मुठ्ठी बन जाता है। उसके चाव उड़ जाते हैं और उसके आँचल में आहें और आंसू रह जाते हैं।

एक बार मैं एक डाक्टर कर्नल की मां को उसकी एकड़ों में फैली कोठी में मिलने गया। ढूँडते हुए मुझे वह नौकरों की कोठड़ियों में से एक में मिली। वह छोटी सी अंगीठी पर खुद खाना बना रही थी। इस दृष्य ने मेरा हृदय गहराई तक हिला दिया। क्या मनुष्य अपनी जन्मदाता माँ के प्रति इतना कठोर भी हो सकता है?

एक आठ दस बच्चों की मां बिमार पड़ी थी, मैं मिलने गया, उस बदकिस्मत मां ने बताया कि मैंने टोकरा भरकर बेटों को जन्म दिया, परन्तु किसी के पास मेरे लिए समय नहीं।

बर्बरता का यहीं अन्त नहीं होता, नाशुकरे बच्चे माताओं को बालों से पकड़ कर घसीटते हुए देखे जाते हैं, उन पर दिल को चीरने वाले कड़वे

बोलों का वार करते हैं। कई तो माता पिता को भूखे प्यासे मरने के लिए मजबूर करते हैं।

विधवा मां की जोड़ी हुई हजारों रू० की रकम पर कब्जा करके उसके लिए चार गज़ खदद्र के कफ़न का खर्चा भी सहार नहीं सकते। बहुत सारे बच्चों के पास माता पिता की मौत पर एक हफ्ता या दो हफ्ते अफसोस करने की भी फुरसत नहीं होती। माताओं के अनादर, अन्याय, दुख और पीड़ा के बुरे से बुरे दुखांत के साथ संसार भरा पड़ा है।

जैसे मोतियों की कीमत से अज्ञानी मोतियों को रेत में गुम कर देता है, उसी प्रकार सत्कार वहीन हृदय मल्लिका का रूतबा रखने वाली माँ को अनादर से रुल-रुलाकर मार देते हैं।

जहां मां का सत्कार नहीं, माँ के लिए गहरा सन्मान नहीं, मां के लिए किसी सुख स्वाद का त्याग नहीं, मां की दिल के चाव से सेवा नहीं, वहां धर्म तो क्या, वहां साधारण सभ्यता भी नहीं होती। संसार में सच्ची सभ्यता का मुंह देखने के लिए मां का सत्कार वा पूजा होगी, नहीं तो मनुष्य उतनी देर असभ्य ही रहेगा। हृदय की उच्च भावनाओं के साथ ही मां का रूप दिखता है और उसके लिए सत्कार हो सकता है। उच्च भावों की वर्तमानता से वंचित, कौए की तरह पंख लगाकर मोर नहीं बना जा सकता।

मां के लिए सन्मान भरा हृदय मां को गुणों की खान देख सकता है। सन्मान रहित हृदय को मां रहिमत वा फरिश्ते का रूप दिखाई नहीं देती। इसलिए उसके बोल व्यवहार भी मीठे नहीं हो सकते।

यदि हमारे हृदय में कृतज्ञता का भाव है, तभी मां का हितों भरा, रहमतों व उपकारों भरा रूप दिखाई देता है। तो ही हम अपने आपको उसका करज़ाई अनुभव कर सकते है और उस कर्जे को कुछ हल्का करने की सोच सकते हैं। यह कोई लिंकन जैसा फरिश्ता ही महसूस कर सकता है, जिन्होंने इतिहासिक सुनहरी अक्षरों की रचना की थी कि "मैं जो कुछ भी हूँ और जो कुछ भविष्य में बनने की आशा रखता हूँ, उस सबका श्रेय मेरी मां को जाता है।"

निर्दयी वा नाशुकरा पुत्र एक सांप या भेड़िए जैसा होता है, वह हिंसक होकर मां को कोसता है। दया के बिना मनुष्य हैवान बन जाता है। जिस सन्तान को माता के प्रति भी दया नहीं आती, वह और मनुष्यों पर दया कैसे कर सकते हैं? दया के बिना मनुष्य के व्यवहार में कोमलता नहीं आ सकती। वह कठोर ही रहेगा।

हृदय के भीतर के सन्मान, श्रद्धा, शुकरगुजारी और दया के भाव से ही मां की पूजा हो सकती है। यह खज़ाना भी माता पिता से ही मिलता है, परन्तु यह भाव गुणधारियों की संगत से बढ़ता है और कठोर मनुष्यों की संगत से घटता है। मां की सच्ची सेवा करना गौरव की बात है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने मानव सम्बन्धों में नर्क को देखा और गहरा ज़ख्म खाया। उन्होंने ऐसे रिश्तों में इन्कलाब लाने की ठानी। उन्होंने अपने देव प्रभावों से बंजर हृदय रखने वाले मनुष्यों की बर्बरता दूर की और उनके भीतर सन्मान, श्रद्धा, शुक्रगुजारी वा दया भावना के अंकुर पैदा किए। इससे रिश्तों में नर्क कम हुआ और स्वर्गिय, मनोहर लीला पैदा होनी आरम्भ हो गई। कोयले की तरह काले हृदय हीरों की तरह चमकने आरम्भ हो गए। उन्होंने मनुष्यों की रिश्तों में कायाकल्प करके, विशेष रूप से माता पिता के सम्बन्ध में नये युग का

निर्माण किया है।

उनकी शरण में आकर उनके प्रभावों को पाकर सन्तान अपनी मां की पूजा करती है। तहसीलदार अपनी माताओं के प्रतिदिन चरण धोने का सुख प्राप्त करते हैं। बर्फ जैसे सफेद तौलिए को छोड़कर अपनी पगड़ी से मां के पैर धोकर पाक खुशी के वारिस बनते हैं। सद्सन्तान सेवा करती है तो माता पिता खुशी के पाक आंसु बहाते हैं और कहते हैं, "बच्चा हम इस लायक नहीं।" माता पिता की थोड़ी सी भी दूरी सन्तान सहन नहीं कर सकती। दुखी माँ बाप बच्चों पर कलंक होते हैं और नेक सन्तान ऐसा कलंक लेने से डरती है।

माता पिता सन्तान के दिनों में घर - घर में गुरु की कृपा से इस सम्बन्ध में स्वर्ग उत्पन्न होता है। पुत्र माता पिता के पैर धोते हैं, चरणामृत लेते हैं। उनके, गले में फूलों के हार डालते हैं। माता पिता को भेंट देते हैं, उनके लिए हर कुर्बानी तुच्छ अनुभव करते हैं। माता पिता आशीर्वाद की बारिश कर देते हैं। पाक खुशियों से घर का वातावरण महक उठता है। यह गुरु की आद्वितीय देन है।

मानवता देव आत्मा सत्गुरु को किसी तरह पहचान सके और उनके आद्वितीय प्रभावों के द्वारा अपनी बिगड़ी कला को किसी तरह संवार सकें ताकि माता पिता सन्तान का सम्बन्ध स्वर्गिय बन सके। इसी में संसार का कल्याण है।

माता पिता का उपकारी रूप

मेरे बहुत ही सन्मान वा प्यार के योग्य मेरे बहुत हितकारी वा उपकारी मेरे प्यारे माता - पिता जी,

सत्य देव की जय के साथ आपके श्री चरणों में प्रणाम करती हूँ और आपके अनगिणत उपकारों के लिए आपको बहुत - बहुत धन्यवाद देती हूँ। वैसे तो आप जैसे माता पिता को भुला पाना असम्भव है, परन्तु माता पिता सन्तान दिवस के अवसर आपकी विशेष याद आती है।

मैं अपना बहुत सौभाग्य समझती हूँ, जो मुझे आपके घर में जन्म लेने का अवसर मिला। आपके पूर्वजों को धन्यवाद देती हूँ कि जिन्होंने आपको ऐसी योग्यता दी, जिस पर आपकी सन्तान को गर्व है। उस योग्यता के जो अंश हम सब बहन भाईयों को मिले हैं, उनके कारण ही हमने अपने - अपने field में नाम कमाया है। हमारा आत्म विश्वास, मेहनत, कर्त्तव्य - परायणता, बुर्जुगों का सन्मान वा सेवा, दूसरों के लिए कुछ करने का जज़बा, यह सब आपकी देन है। जहां बेजी आपने माँ का अथाह प्यार दिया वहां पिता जी ने अनथक परिश्रम से परिवार की परवरिश की और हमें सख़्त मेहनत करने और दूसरों के दुखों को घटाने के लिए कुछ और कर गुज़रने की सदा प्रेरणा दी। हर परेशानी में आप जिस प्रकार दिवार की तरह खड़े रहे और हम लोगों की परेशानियों में भी आप दुखी होकर भी सदा हौसला बढ़ाते रहे, वह कैसे भुलाया जा सकता है।

आप दोनों का फार्म पर संघर्ष का जीवन मेरे से बेहतर कौन जानता है। कठिनाईयों में से गुजरकर भी आपने अपनी बेटियों को पैरों पर खड़ा किया और उन्हें समाज के एक लाभदायक अंग बनाने का प्रयत्न किया, आप सदा अपनी बेटियों

पर गर्व करते थे।

आपका सबसे बड़ा उपकार है आपका परम पूजनीय भगवान देवात्मा के दर पर आना और उसकी अज़मत को समझना। इसके कारण ही हम बेटियों को आपने बोझ नहीं समझा बल्कि अपनी ताकत बनाया। हमारे भीतर अच्छे संस्कार देव समाज की संगत ने पैदा किए, जो - जो कमज़ोरियां हम में हैं, वह हमारी अपनी - अपनी प्रकृति के कारण हैं, परन्तु आपने दुनियां की best चीज़ से, देव धर्म की शिक्षा से हमें परिचित करवाया। आप खुद झूठे विश्वासों से बचे और हमारे भीतर भी वह Scientific Attitude पैदा कर दिया। हमारी सोच समझ दुनियां से अलग हो गई। कृतज्ञता, सन्मान के शब्द दुनियां में सुनने को नहीं मिलते, हमें इनका ज्ञान दिया, बड़ों के, उपकारियों के उपकार याद करने का वातावरण दिया। अपनी गल्तियों को देखने मानने वा क्षमा याचना करने का वातावरण दिया। नहीं तो यह शब्द हमारी dictionary में कहां से आते। अच्छा क्या है, बुरा क्या है, यह मानसिक ज्ञान इस वातावरण से मिला। अपनी कमज़ोरियों को दूर करने के लिए संघर्ष करने की सोच इस वातावरण से मिली। यह हमारी बदकिस्मती है कि जो अनमोल चीज़ आपने धरोहर दी थी, हम उसको सम्भाल नहीं रहे। हमारी अगली नसल तक पहुँचते - पहुँचते यह हाथों से फिसलती जा रही है, परन्तु आपने हमें बहुत अनमोल धरोहर दी है। हम इस योग्य रहें कि इस धरोहर को सम्भाल सकें।

मेरे प्यारे माता पिता जी, आपकी एक और बहुत बड़ी देन है, वह हैं हमारे बहन भाई। आपके जाने के बाद हम बहन भाई पहले से भी अधिक निकट हो गए हैं। हम मिलकर जहां आपको याद करते हैं, वहां आपके पीछे सद्भाव वा प्रेम से रहकर आपके आत्मा को सुख पहुँचाने का यत्न करते हैं। उमर के साथ लोगों में निकट से निकट का सम्बन्ध साधारणता शिथिल हो जाता है, परन्तु आपके आशीर्वाद से हमारा बहन भाईयों का सम्बन्ध और मजबूत हुआ है। हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे भी इस परम्परा को कायम रख सकें।

हमारी सफलताओं को तोलने का आपका तराजु और था। हम धन दौलत में कितने भी आगे निकल जाएं, सुख सुविधाएं कितनी भी प्राप्त कर लें, कितना भी नाम कमालें, परन्तु आपको सच्ची खुशी तभी मिल सकती है, यदि परिवार सब मोटी बुराईयों से बचा रहे, अपने से निकलकर दूसरों के काम आएं, श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी के भावों को उन्नत कर सकें। आपके भीतर एक - एक मोटी बुराई के लिए सख्त नफरत थी। हम सब भी उस मार्ग पर चल सकें, इसमें आपकी खुशी के अलावा हमारी अपनी भी भलाई है।

मेरे ऊपर तो आपने एक और बहुत बड़ा उपकार किया है, मुझे विकासालय में रखकर वहां शिक्षा पाने का मौका दिया, उसने मेंरी जिन्दगी को कुछ न कुछ भिन्न ढंग से जीने के योग्य बनाया। मुझे बाहर के वातावरण से सुरक्षित रखा। मेरी तुच्छ सी योग्यताओं को निखरने का मौका मिला। मैं परम पूजनीय भगवान देवात्मा रचित ग्रन्थों की परीक्षा Credit के साथ पास करने के योग्य हुई। यह सब आपसे मिली योग्यता और वातावरण का परिणाम है। कुछ सेवा की ओर ध्यान जाता है, वह आपकी प्रेरणाओं का फल है।

मैं यही कामना करती हूँ कि किसी तरह मैं आपकी सच्ची खुशी की भागी बन सकूं। अपनी योग्यताओं को बढ़ा सकूं और अपनी कमज़ोरियों को दूर कर सकूं।

सुरजीत बराड़

माता पिता के प्रति कृतज्ञता का अनुभव

मेरे बहुत सन्मान के योग्य मेरे जन्मदाता, रक्षाकर्त्ता, पालनकर्त्ता और शिक्षा दाता मेरे श्रद्धेय पिता जी और माता जी, आपके श्री चरणों पर सिर रखकर प्रणाम करता हूँ।

जो शब्द मैंने ऊपर लिखें हैं वह लिखने में तो बहुत छोटे हैं और उनको लिखने में तीन सैंकण्ड ही लगे हैं, परन्तु उनमें जो बड़ी सच्चाई छुपी हुई है, जिस सच्चाई पर मैं अनेक बार विचार करता रहा हूँ, जैसे मैं उस पर विचार करता गया, उसका दायरा बढ़ता ही गया। मेरा हृदय आपके महान उपकारों को अनुभव करते-करते सरस और निर्मल होता गया और आँखों से आंसू बहने लगे और आपके इस महान रूप को देखकर दिल धन्य-धन्य हो गया।

हे मेरे जीवन दाता सत्गुरु! आप धन्य हो। आप जी ने मेरे माता पिता की जो उपकारी छवि मुझे अपनी देव ज्योति का अमूल्य दान देकर दिखाई है, उसके लिए मैं हमेशा आपका ऋणी वा करज़ाई रहूँगा।

मेरे श्रद्धेय माता पिता जी, मैं आपका रूप अपने जन्म दाता के रूप में देखा है। जब मैं विचार करता हूँ कि मेरे हाथ, यह आँखें, यह पैर, यह कान, यह दिमाग अर्थात् यह मेरा समूचा शरीर कहां से आया, तो फिर इस सच्चाई का अनुभव हुआ कि यह शरीर आप दोनों का दान है। आपके बिना यह शरीर न होता। आपका यह अमूल्य दान है कि मेरे शरीर के सब अंग बहुत अच्छी हालत में मैंने आपसे प्राप्त किए हैं। जब मैं और बच्चों की ओर ध्यान ले जाता हूँ कि जो जन्म से ही अंगहीन या विकृत अवस्था में पैदा होते हैं, कईयों की आँखें नहीं होती, कईयों की टांगे टेडी मेढ़ी होती हैं कईयों के हाथ काम नहीं करते, कई गूंगे वा बोले होते हैं, कई दिमाग के लिहाज़ से बहुत कमज़ोर, कई बेढंगे शरीर के साथ पैदा होते हैं, और इस संसार में बहुत असहाय वा दर्दनाक जिन्दगी बसर करते हैं, तो अपने हष्ट-पुष्ट शरीर को देखकर आपका उपकार और भी बढ़ जाता है। आपका वह महान रूप कि मुझे पूरे अंगों के साथ आपने जन्म दिया, आपके उपकार को और भी बढ़ा देता है।

फिर आपके रक्षाकर्त्ता वा पालनकर्त्ता रूप की महिमा को अनुभव करता हूँ। मैं जब संसार में आया तो गूंगा, बहरा, भूखा, प्यासा और नंगा था। उस समय किसने दूध पिलाया, किसने मक्खियों, मच्छरों, कौओं, कुत्तों से रक्षा की, किसने मुझे सर्दी से बचाने के लिए गर्म-गर्म बिस्तरों में ढक कर रखा, किसने मुझे कपड़े पहनाए, किसने मुझे झुलस देने वाली गर्मी से बचाया, किसने मुझे बोलना सिखाया, किसने मुझे चलना सिखाया, किसने रोटी खाना सिखाया, किसने उठना, बैठना सिखाया, तब मेरे हृदय से यह आवाज़ निकलती है कि हे मेरे माता और पिता जी, केवल आप ही मेरे रक्षाकर्त्ता वा पालनकर्त्ता हो। मेरी यह रक्षा वा पालना दो चार दिन, दो चार हफ्ते, दो चार साल नहीं बल्कि सालों के साल आप दोनों ने की हैं और बहुत सुन्दर ढंग से की है। ओह! कितना अनोखा संग्राम, कितनी लम्बी तपस्या है आपकी! मैं यह सारी सिनेमा की फिल्म की तरह अपनी आँखों के सामने देख रहा हूँ। कहां एक नन्हा सा जीव और कई सालों के बाद सुडौल नौजवान बन जाना। इस बीच का समय कितना लम्बा।

जब मैं किसी नौजवान स्त्री को देखता हूँ कि वह अपने बच्चे को दूध पिलाती है, तो ध्यान जाता है कि मेरी श्रद्धेय माता जी ने भी इसी प्रकार मुझे दूध पिलाया होगा, जब मैं देखता हूँ कि कोई स्त्री अपने बच्चे को नहला धुला रही है, उसके एक-एक अंग को साफ कर रही है, तो मेरा ध्यान जाता है कि मेरी माँ भी मुझे इसी प्रकार नहलाती होगी, मेरे गन्दे कपड़े धोए जाते होंगे। जब मैं किसी बच्चे को बिमार देखता हूँ, उसकी माता कितनी दुखी वा बेचैन होती है, रोती

है, उसको अपने खाने, पीने और सोने की भी सुध नहीं रहती, अपना सारा दुख आराम भूल जाती है, अपनी सारी ताकत बच्चे को ठीक करने में लगा देती है, तो मेरे बचपन का नज़ारा मेरे सामने आ जाता है, मैं उसे महसूस करता हूँ और मेरा दिल पिघल जाता है। ओह! कितनी कठिन तपस्या!! मैंने अपनी माँ का यह उपकारी रूप देखा है। मेरी प्यारी माता का यह संग्राम किस लिए? यह सब उन्होंने मेरे लिए किया है। हर माँ को बच्चे के लिए कुछ भी करता देखता हूँ, तो यही महसूस करता हूँ कि मेरी माँ ने भी मेरे लिए सब कुछ इसी तरह किया होगा।

ओ मां, मेरी प्यारी मां। मैं आपका बहुत कर्ज़दार हूँ। यह लिखते हुए मैं फूट-फूट कर रो रहा हूँ। यह पत्र लिखना मेरे लिए कठिन हो रहा है। कागज खराब न हो जाएं, इसलिए लिखना बन्द करके खूब आंसू बहाए। मैं आपके उपकारों का क्या ब्यान करूं, जितने मेरे शरीर पर बाल हैं, उनसे भी कई गुणा बढ़कर आपके उपकार हैं।

मेरे श्रद्धेय पिता जी! मेरे वस्त्रों, मेरे खिलौनों और खाने पीने आदि पर आपने जो धन खर्चा, उसके लिए आपने कितनी मेहनत की। मेरी परवरिश में सालों के साल आपने कितना संघर्ष किया, यह सुन्दर नज़ारा याद करके आपके उपकारों की कोई सीमा दिखाई नहीं देती।

फिर जब मैं आपके शिक्षा दाता रूप पर विचार करता हूँ, तो मेरे सामने एक नई दुनियां खुल जाती है। मैं लाखों लोगों को अनपढ देखता हूँ, उनकी कृपा-पात्र अवस्था नज़र आती है। मैं अनपढ़ आदमियों को जब दूसरों से पत्र पढ़वाते देखता हूँ, वह पत्र लिखवाने के लिए भी दूसरों की इच्छा के मोहताज होते हैं, अनपढ़ता कितना बड़ा अभिशाप है, यह अनुभव करता हूँ। मैं देखता हूँ बच्चे हाथों में किताबें लेकर भागते हुए स्कूल जाते हैं, कितना सुन्दर दृष्य! उनमें उस समय यह सोचने की ताकत नहीं होती कि वह एक नई दुनियां में प्रवेश कर रहे हैं और उनके आगे ज्ञान का भण्डार खुल रहा है, परन्तु यह शिक्षा देने के लिए आपने कितने त्याग किए हैं। यदि आप मुझे शिक्षित न करते तो मैं पुस्तकों के ज्ञान से वंचित रहता, जिन्हें पढ़कर मेरे जीवन में एक क्रान्ति आई है। आपका यह उपकार मेरे लिए वरदान बन गया है। मैं देख रहा हूँ कि और रिश्तेदारों ने बच्चों को कहां तक पढ़ाया है, तो आपकी महिमा और भी उज्जवल होकर मेरे सामने आती है। मैं आप दोनों के किस-किस उपकार का वर्णन करूं, मेरा रोम-रोम उपकृत है। मेरे खून की एक-एक बूंद आपका अंश है। मेरा यह समूचा शरीर, उसके अंगों पर आपकी छाप है। मैं पूर्ण रूप से आपकी ही कृपा का पात्र रहा हूँ। मैं आपकी महिमा क्यों न गाऊं क्यों न मेरा दिल आपको देखकर सन्मान से झुक जाए। एक-एक बार आपके चरणों में शीश रखकर अपने आपको बहुत खुशनसीब अनुभव किया है। आपके चरणों में शीश रखना कोई दिखावा मात्र नहीं। जब कभी मैं आपको प्रणाम करने के लिए चलता हूँ, तो आपकी उपकारी तस्वीर को देखकर दिल भर आता रहा है और भरे दिल से शीश आपके चरणों में रख देता हूँ। कई बार इच्छा पैदा हुई है कि मैं काफी देर तक अपना शीश आपके चरणों में रखे रखूं। जब प्रणाम करके वापिस आता हूँ तो मेरे अश्रु बह रहे होते हैं। दिल आनन्दित हो जाता है। जिनको यह अनुभव प्राप्त नहीं, वह बहुत अभागे नज़र आते हैं। सबसे बढ़कर मैं जिस लिए आपका कृतज्ञ अनुभव करता हूँ, जो आपने मुझे दिल की अच्छी योग्यता दी, जो मैं अपने तारणहारे, परमहित कर्त्ता सत्गुरु को पहचान सका हूँ। उनकी शरण में आने का सौभाग्य प्राप्त कर सका हूँ। जिनकी शरण में आकर मैं आपके रूप को देख सका हूँ।

हे मेरे प्यारे माता पिता जी, आपके जन्मदिन पर मैं आपको क्या उपहार दूँ। मैं आपके श्री चरणों में हृदय की तह से निकले हुए उपरोक्त श्रद्धा और कृतज्ञता के फूल भेंट रखता हूँ। यह मेरा सौभाग्य है।

आपका नाचीज़ बेटा

जीवन प्रसंग

उपेक्षा और क्रूरता न हो निःस्वार्थ सेवा का जवाब

दुखद है कि देशभर में संयुक्त परिवार लगातार घटते जा रहे हैं और एकल परिवार बढ़ रहे हैं। युवाओं में अलग गृहस्थी बसा लेने का चलन बढ़ने से परिवार के बुजुर्ग पुराने घर की यादों से चिपके अकेले, असहाय और ठिठुरते हुए छूट जाते हैं। युवाओं को स्वतंत्रता प्रिय है। यह विकास के एक निश्चित मुकाम पर जरूरी भी है पर वे इतने भी निर्मोही न हो जाएं कि बूढ़े, लाचार, बीमार माता-पिता को लगने लगे कि सुख बच्चों के साथ ही चला गया है और अब घर की बारिश में टपकने वाली छत और आँखों में सूख गए आंसुओं के बीच ही कोई मजबूत रिश्ता रह गया है।

इन्हीं स्थितियों को ध्यान में रखकर केंद्रीय मन्त्रिमण्डल को एक नया कानून बनाने की पहल करनी पड़ी है। सरकार माता-पिता, वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल विधेयक-2007 के जरिये बुजुर्गों को कानून की लाठी देने जा रही है। नए कानून के प्रावधानों के तहत बूढ़े माँ-बाप की देखभाल संतान का दायित्व है। इससे जुड़े मुकदमों में बुजुर्गों को सस्ती कानूनी सहायता भी मिलेगी। जिन व्यक्तियों को अपने मां-बाप या बुजुर्ग रिश्तेदारों की संपत्ति विरासत में मिलेगी उन पर ऐसे बुजुर्गों की देखभाल का जिम्मेदारी भी होगी।

गरज यह कि श्रवण कुमार को तो पुरानी पोथियों में बंद कर हम कब का ताला लगा चुके हैं क्योंकि वह तो अपने दृष्टिहीन माता-पिता को कांवर में बिठाकर तीर्थ यात्रा करवाता है। गार्डन मूर की सिलिकान चिप्स आधारित तकनीकी क्रांति के और थैचर रीगनवादी समय के बाद के अर्थशास्त्र के समय में केवल अधिकार के संबंध ही बाकी बचे हैं। कहां ये जीवन स्थितियां और कहां श्रवण कुमार का दायित्व/नैतिक बोध! सवाल है कि अब जिन बुजुर्गों की संपत्ति बच्चों को विरासत में मिलेगी क्या वही अपनी देखभाल करने के लिए बच्चों पर कानून की छड़ी चला पाएंगे। जिन माता-पिता ने अपना सब कुछ बच्चों का भविष्य संवारने में खर्च कर डाला हो और जो उम्र के ठहराव भरे पड़ाव में अपनी मार्केट वैल्यू भी गिरा बैठे हों वे बच्चों को कानून की लाठी से कैसे हांक पाएंगे? यह भी संभव है कि प्रस्तावित कानून की वजह से बच्चे नैतिक फर्ज को देखने की जगह कानून के दांव-पेंच ही देखने को प्राथमिकता देने लगें। हमारे पास विरासत में मिले छतनार पेड़ के लिए कुल्हाड़ी तो है लेकिन पेड़ लगाने का समय और स्थान नहीं है।

उदारीकरण और विश्व बाजार से जुड़ी व्यवस्था में कपड़े, जूते या बाइक महंगे नहीं लगते, माता पिता की आंख के मोतियाबिंद का आपरेशन या धुंधली दृष्टि के लिए नई ऐनक बनवाना बहुत मांगा लगता है। सवाल महंगाई का उतना नहीं जितना जज़्बे का है। समृद्धि, दिखावे और कथित स्वतंत्रता की हाथी दांत की मीनार भी कितनी क्रूर है? बड़े-बुजुर्ग के नौकरी से रिटायरमेंट के बाद की घरों में उनकी उपेक्षा के दृश्य देशभर में आम हो चले हैं। कुछ दिन पहले पंजाब के मंडी अहमदगढ़ क्षेत्र के बुहराई कला गांव में अजमेर सिंह और उसकी पत्नी बसंत कौर को विवश कर दिया गया है कि वे अपना भोग जीते जी ही डाल लें। उनके तीन बेटे, तीन बेटियां तथा दोहते-पोते परिवार के गुलदस्तों के रूप में खिले हैं लेकिन गुलदस्ते की रेत में स्नेह-जल की बूंदें नदादर है। अजमेर सिंह का भोग न तो मजाक था, न प्रचार का कोई स्टंट। वहां थी संबंधों की टूटन और अथाह

निराशा। तमिलनाडु में इरोड जिले में हाथ-पैर से लाचार 75 वर्षीय महिला को उसी की बेटी ने कूड़े के ढेर पर फिंकवा दिया। ऐसे बुजुर्गों की संख्या कम नहीं जो उपेक्षा, नफरत और निराशा सहते-सहते दुनिया से विदा हो जाते हैं।

एक अनुमान के मुताबिक छह में से सिर्फ एक मामले की ही रिपोर्ट होती है। लाखों बुजुर्गों को नितांत अकेलेपन में जीना पड़ रहा है। ममता की मारी माताओं की दशा और भी खराब है। वृद्धाश्रमों की संख्या विकास की प्रतीक कम और नैतिकता के पतन की व्यथा ज्यादा लगती है। जिन्होंने हमें संभाला, संभलकर चलना सिखाया, धूप में रहकर भी हम पर छाया की, उन्हें संभाल पाने के सवाल पर हम शून्य की तरफ देख रहे हैं। **हमारे मां-बाप ने अपने दायित्व का निर्वाह कानून से डरकर पूरा नहीं किया था। उस निःस्वार्थ साधना का जवाब उपेक्षा और क्रूरता तो हरगिज नहीं होनी चाहिए।**

अब सवाल मां-बाप की सेवा का ही न रहकर अपनी संस्कृति को बचाने, न बचाने का भी है। मुट्ठीभर ज़मीन दरकने से यदि कोई पीढ़ी नहीं घबराती तो उसे पाताल का रास्ता देखने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। क्योंकि अगर आधार ही नहीं संभल सका तो भविष्य का पेड़ कहां फल देगा?

गुस्से की नुमाइश से बचें।

न्यूयॉर्क निवासी डेविड जे. पोलॉय का कहना है कि जीवन जीने की कला उन्होंने एक टैक्सी ड्राइवर से सीखी। बात तकरीबन 16 साल पुरानी है, जब वह एक टैक्सी से ग्रैंड सेंट्रल स्टेशन की तरफ रवाना हुआ। वहां पहुंचने के बाद ड्राईवर ने टैक्सी पार्क करनी चाही कि तभी एक काली टैक्सी के सामने आकर खड़ी हो गई। ड्राइवर ने ब्रेक लगाया और टैक्सी कार से कुछ इंच की दूरी पर जाकर रुक गई। उसके बाद क्या हुआ? दूसरी कार के चालक ने खिड़की से अपना मुंह निकाला और टैक्सी ड्राइवर को गालियां देनी शुरू कर दी। टैक्सी ड्राईवर ने मुस्कुराते हुए उसका अभिवादन किया। यह सब देख रहे डेविड ने उससे पूछा, आपने ऐसा क्यों किया? वह आदमी आपकी कार को ठोक देता और हमें अस्पताल पहुंचा सकता था। टैक्सी ड्राइवर ने जवाब दिया - मैं उसे क्या कहता, वह बेचारा परेशानियों से घिरा हुआ था। बहुत से लोग जमाने भर की परेशानियों, निराशा और हताशा सिर पर लेकर घूमते हैं और उसे उडेंलने की जगह ढूंढ़ने लगते हैं। और जो सामने पड़ा उस पर सारा कुछ उडेंल देते हैं। जब कोई इस तरह पेश आए तो इसे अपने दिल पर न लें। आप अभिवादन के साथ उसे शुक्रिया कहकर आगे जाएं। आप खुद को खुश पाएंगे। यह मेरा दावा है, उस ड्राइवर ने जवाब दिया। अक्सर सभी ऐसी परेशानियां सिर पर लेकर चलते हैं और गुस्सा किसी पर निकालते हैं। उस दिन से डेविड ने प्रण किया कि वह किसी के साथ इस तरह पेश नहीं आएंगे। कई बार मैंने ऐसी परिस्थितियों का सामना किया है। लोग गुस्से से भरे अपनी चिढ़ उतारना चाहते हैं। उस टैक्सी ड्राइवर की सीख को ध्यान में रखकर मैंने उन वाक्यों को प्रतिष्ठा का प्रश्न नहीं बनाया। मैंने मुस्कराकर उनका अभिवादन किया और शुक्रिया कहकर विदा हो गया। वरिष्ठ अधिकारी अपने अधीनस्थों का पूरा ख्याल कर हित के बारे में सोचें। फंडा यह है कि महान व्यक्ति कभी भी गुस्से की नुमाइश नहीं करते। आज से ही इस मूल मंत्र का अनुसरण करें। खुद को बदल डालिए। मैं दावा करता हूँ कि आप खुश रहेंगे। मेरा वादा है।

खून से रंगे हैं धर्मों के हाथ

'मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।' मुहम्मद इकबाल ने कहा था लेकिन सच बात तो यह है कि आएदिन भड़कने वाले इन दंगों ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि मजहब ही आपस में बैर रखना सिखाता है। धर्म के कारण ही एक इन्सान दूसरे की जान का दुश्मन बन जाता है और वह एक दूसरे को जान से मारने व खून बहाने पर उतारू हो जाता है। इसीलिए आज के संदर्भ में उर्दू के मशहूर शायर दिवाकर राही का यह शेयर ही सही है: 'लाख शैखोबिरहमिन कुछ भी कहें, आज मजहब जेहल की जागीर है।'

जेहल का अर्थ है अज्ञान, जहालत और सचमुच इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि सब से ज्यादा अज्ञान, जहालत और जिहाद धर्म के नाम पर ही प्रचलित है। यह भी कहा जाता है कि सभी धर्म आपसी प्रेम व भाईचारे पर बल देते हैं पर यदि गौर से देखा जाए तो इस तरह के ये नारे केवल अपने ही धर्म को मानने वालों के लिए होते हैं। बाकी जो जिस धर्म को मानता है उस की नजर में दूसरे धर्म वाले पाखंडी व नास्तिक हैं।

इन धर्मों के अनुयायियों की सदैव यह चेष्टा रहती है कि जैसे भी हो दूसरे धर्म के मानने वाले को खुदा, भगवान, गौड के नाम से जबरन अपने धर्म में घसीटा जाए, अपने धर्म को सर्वश्रेष्ठ साबित किया जाए, चाहे इस के लिए कितनी भी तलवारबाजी क्यों न की जाए, कितना भी खूनखराबा क्यों न हो, ऐसा करना इन लोगों की नजरों में पुण्य कमाना होता है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि आज तक संसार में जितने भी दंगे, लड़ाइयां, युद्ध, हत्याएं, उत्पीड़न, मारामारी और अत्याचार की घटनाएं धर्म के नाम पर हुई हैं उतनी किसी अन्य कारण से नहीं हुई। एक धार्मिक गुट या समुदाय ने अवसर मिलते ही दूसरे धर्म वालों को मारा या फिर बरबाद ही कर दिया। इस में मरने वाले का दोष केवल इतना था कि वह आक्रांता के धर्म को मानने वाला नही था।

भारत में धार्मिक दंगों और मजहब के नाम पर मारकाट की घटनाओं की कोई कमी नहीं रही है। 1947 में देश के विभाजन के बाद तो इस में बढ़ोतरी ही हुई है। विवाद चाहे राम जन्मभूमि का हो या बाबरी मसजिद को ले कर रहा हो, धार्मिक उन्माद में बहने वालों का एक ही लक्ष्य रहा है कि विधर्मियों को मार डालो और जरूरत पड़े तो खुद भी धर्म के नाम पर शहीद हो जाओ।

मिजोरम और नागालैंड के आदिवासी ईसाई आए दिन हिंदुओं से जूझते रहते हैं और अपनी अलगाववादी गतिविधियों में सक्रिय हैं। देश के मध्य भाग में तो हिंदू और मुसलमान एक दूसरे को तबाह करने पर ही तुले रहते हैं। उन के साथ-साथ पड़ोसी देश श्रीलंका में भी तमिलहिंदुओं और बौद्धों के बीच मारकाट मची ही रहती है।

मई, 1984 में महाराष्ट्र के भिवंडी क्षेत्र में धार्मिक उन्माद के फलस्वरूप मारकाट, हत्याओं और आगजनी का जो तांडव हुआ था, उसे लोग आज तक नहीं भुला पाए हैं। तब इन धार्मिक दंगों

में लगभग 300 आदमी मारे गए थे। लाखों करोड़ों की संपत्ति आग में जल कर राख हो गई थी और लगभग सारा उद्योग व्यापार 2 सप्ताह तक पूरी तरह ठप हो गया था जिस के चलते हजारों लोग भूख से प्रभावित हुए। सब से अधिक दिल को दहला देने वाला दृश्य तो वह था जब इन दंगों में एक संप्रदाय के लोगों ने दूसरे संप्रदाय के 20 लोगों को जिंदा ही जला डाला।

दिल्ली, लखनऊ, सीहोर, मेरठ, हैदराबाद आदि में अयोध्या की राम जन्मभूमि एवं बाबरी मसजिद के विवाद को ले कर ऐसे ही दंगे भड़क उठे थे जिस में बहुत से निर्दोष लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था, लेकिन बंदूकों के दम पर वहां जल्द ही शांति कायम कर ली गई वरना मौत का जो भयावह तांडव वहां होता उस की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

भारत की जमीन पर पड़ते रक्त के छींटों के साथ एक सवाल पूरे देश के सामने खड़ा है कि क्या वाकई हम धर्मनिरपेक्ष हैं या उस की आड़ में उग्रवादियों को पनपने का मौका दे रहे हैं। प्रतिदिन में हो रही घटनाएं धार्मिक उन्माद का निकृष्टतम उदाहरण हैं। अब यह फैसला हमें खुद करना है कि यहां जो कुछ हो रहा है क्या वह सब धर्म के अतिरिक्त किसी और वजह से है?

इस तरह धर्मों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जिस में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए दूसरे धर्म के अनुयायियों को यातनाएं दीं, तड़पातड़पा कर मारा और यह सब उन्हें सही लगता था क्योंकि हर धर्म का अलग-अलग धर्मगुरु ही नहीं, अलग-अलग ईश्वर भी है जो यह करने को बुरा नहीं समझता।

धर्म के नाम पर जिहाद

धर्म के नाम पर युद्ध कर के सदियों से शासकों और धार्मिक नेताओं ने लोगों का अपने स्वार्थ के लिए खूब फायदा उठाया। युद्ध हमेशा से शासकों और धार्मिक एजेंटों के ढकोसले रहे जिस में दुनिया भर को नुकसान हुआ। धर्म का नाम लेकर जितने भी युद्ध हुए उन में आखिर आम जनता, महिलाएं, बेकसूर बच्चे ही मारे गए हैं।

मध्ययुग में करीब 2 दशकों तक ईसाई तथा मुसलमान 'होली वार' में उलझे रहे थे। 7वीं शताब्दी में जिहाद का जिक्र है जो हिंदू सेना और मुसलिम सेना के बीच हुआ। धर्म के लिए लड़ रहे योद्धाओं के बीच भी धार्मिक एकता का नामोनिशान नहीं है। हर धर्म कई वर्गों में बंटा हुआ है, जो आपस में लड़ते रहते हैं।

तमाम इस्लामिक देश शिया और सुन्नी के बीच विभक्त हैं। इन में आपसी खूनी रंजिशें चलती हैं। इराक में शियासुन्नी के बीच तनाव है। दोनों संप्रदायों की लड़ाई में अब तक लाखों लोग मारे जा चुके हैं। पाकिस्तान इस्लामी देश है। यहां सुन्नी मुसलमानों की संख्या 80 फीसदी है और शिया अल्पमत में हैं। दोनों संप्रदायों के अपने-अपने आतंकवादी संगठन हैं। दोनों एक दूसरे की मसजिदों पर नमाज अदा करते समय गोलियां बरसाते हैं। इस तरह धर्म के नाम पर पाकिस्तान में हुकूमत चलती आई है।

अमेरिकी दबाव व डर के बाद भी यहां मुल्लामौलवियों की खूब चलती है। अरब देश 6 दशकों के बाद भी इसराईल के अस्तित्व को पचा नहीं पा रहा है। फिलिस्तीनइसराईल तनाव पहले से ही चल रहा है। अफगानिस्तान में तालिबान ने राज

किया। ईरान में कट्टरपंथी हावी हैं। अफ्रीका के कई देशों में भी मजहबी संगठन सत्ता पर हावी होते जा रहे हैं।

इन युद्धों का खमियाजा उस आम आदमी को भुगतना पड़ रहा है जो इन लोगों के ऐशोआराम के लिए अपनी जेब से दानदक्षिणा देने के बंदोबस्त में लगा रहता है और इन देशों की तमाम धनराशि आम लोगों की भलाई के बजाय इन्हीं हिंसक गतिविधियों में खर्च हो जाती हैं। इतना ही नहीं, युद्ध का मतलब है औरतों का विधवा होना और बलात्कार। औरतों के पतियों के युद्ध में मारे जाने पर जबरदस्ती उन का धर्म परिवर्तन करा दिया जाता था और उन के साथ सामूहिक बलात्कार किया जाना एक आम बात थी। इसी वजह से सती प्रथा जैसी कुरीतियां प्रचलित हुईं जिस में वे अपने पति की चिता के साथ ही जल जाती थीं क्योंकि यही उन के लिए सब से सुरक्षित रास्ता रह जाता था।

धर्मजनित इन संघर्षों में लाखों बेकसूर लोग मार दिए गए। जैसे कि 500 साल पहले स्पेन में 10 हजार लोगों को धर्म के नाम पर मारा गया और 1 लाख से ज्यादा जेल में भूख और बीमारी से मर गए।

11वीं व 12वीं शताब्दी में पश्चिमी देशों के ईसाइयों ने मुसलिम ताकतों के खिलाफ क्रूसेड शुरू किए। क्रूसेडर ने 1098 में यरुशलम पर कब्जा कर लिया पर इस में करीब 1,200 से 1,500 घुड़सवार और 12 हजार पैदल धर्मयोद्धा मारे गए। यही नहीं हिटलर, जोसेफ, स्टालिन, मुसोलिनी जैसे नेताओं ने 100 मिलियन लोगों को धर्म के नाम पर मारा।

इस के अलावा अगर आप गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड की ज्यूडिशियल कैटेगरी खोलें तो उस में क्राइम मास किलिंग की सबहैडिंग देखने पर पता चलता है कि ज्यादातर धर्म के नाम पर नहीं बल्कि एथिज्म के नाम पर मारे गए हैं। गिनीज बुक के हिसाब से सब से बड़ा कत्लेआम जो किसी एक सरकार ने दूसरी सरकार के खिलाफ किया वह 1949 - 1965 के बीच माओजेडोंग (जिन्हें माओत्जे तुंग के नाम से भी जाना जाता है) के राज में हुआ जिस में 26.3 मिलियन चीनी मारे गए। यू.एस. सिनेट कमेटी की वाल्कर रिपोर्ट में बताया गया है कि चीन में वर्ष 1949 में 32.25 से 61.7 मिलियन के बीच मौतें हुई।

धर्म के इन युद्धों में कितने निर्दोष लोगों की जानें गईं, खून की नदियां बहीं, हत्याओं के जघन्य दौर चले, इन का कोई हिसाब नहीं है। हर दंगे और युद्ध में होने वाली हिंसा और क्रूरता पिछले सभी दंगों के अमानवीय कारनामों को मात कर जाती हैं। ये सभी घटनाएं हमें यह सोचने के लिए विवश कर देती हैं कि धर्म के नाम पर ही यह मारकाट और खूनखराबा क्यों होता है? कहीं धर्मनिरपेक्षता के खोखले दावों के बावजूद पूरा देश और विश्व एक तरह के अनचाहे धार्मिक विद्वेष और कट्टरता की ओर तो नहीं बढ़ रहा।

आज जरूरत इस बात की है कि धर्म के इस विकृत और अमानवीय रूप को समझ लिया जाए, धर्म के नाम पर पनपने वाले इन संप्रदायों और धर्मगुरुओं का परदाफाश करते हुए यह समझना होगा कि इन युद्धों व दंगों में मरने वाला व्यक्ति हिंदू, मुसलिम, सिख व ईसाई न हो कर केवल एक इन्सान है। **(सरिता से साभार)**

हमे ॥ फ्रंट फुट पर खेलो

दुनियां में सबसे बड़ा रोग है कि लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे। हम खुद को भूलकर कोई काम करते हुए लोगों की चिंता ज्यादा करते हैं। लाइफ में जब तक खुद से संघर्ष नहीं करेंगे तब तक जिंदगी हमें दुत्कारती रहेगी।

अमृतसर के सांसद और पूर्व क्रिकेटर नवजोत सिंह सिद्धू ने बुधवार को लेज़र वैली, सैक्टर - 10 में 'अनलॉक यूअर पोटेंशियल' विषय पर आयोजित मोटिवेशनल एड्रेस के दौरान ये बात कही। सिद्धू ने अपने लेक्चर में जो कहा उसका सार यही थी कि यंगस्टर्स लाइफ में आने वाली चैलेंजेज का सामना फ्रंट फुट पर आकर करें। उन्होंने लाइफ में हमेशा पॉजिटिव थिंकिग से चलने को कहा। कार्यक्रम का आयोजन एक निजी टीवी चैनल के सहयोग से किया था।

सिद्धू ने कहा कि एक न्यूज़पेपर ने उनके बारे में लिखा था कि नवजोत सिंह सिद्धू नेट प्रैक्टिस के दौरान इस्तेमाल होने वाले नेट तक गेंद नहीं पहुंचा सकता। इसे मैने चैलेंज के तौर पर लिया। 5 साल दिन-रात मेहनत की। रोज 300 छक्के लगाने के कारण हाथों से खून बहने लगता था, लेकिन हार नहीं मानी। 5 साल बाद इसी अखबार ने सिक्सर सिद्धू का नाम दिया। उन्होंने कहा कि देश की तरक्की के लिए क्वालिटी एजूकेशन में इन्वेस्ट किया जाना चाहिए। एजूकेशन ऐसी हो जो युवाओं को जॉब दिलाए। पंजाब में 60 फीसदी यंगस्टर्स हैं, जिन्हें क्वालिटी एजूकेशन से सही दिशा मिले, तो वे पंजाब को सुधार देंगे।

नवजोत सिद्धू ने क्रिकेट के कुछ किस्से सुनाते हुए युवाओं को मेहनत करने और स्वयं पर विश्वास रखने को प्रेरित किया। उन्होंने बताया कि पाकिस्तान के खिलाफ मैच खेलते हुए एक बार सचिन तेंदुलकर के गेंद लगने पर नाक से खून बहने लगा था, लेकिन सचिन ने हिम्मत न हारकर खूब चौके-छक्के लगाकर देश को जीत दिलाई। इसके बाद उन्हें नाक की चोट से उबरने में चार माह लगे, लेकिन उन्होंने चोट लगने पर ठान लिया था कि देश को जिता कर दिखाएंगे। उन्होंने कहा कि निगेटिव सोच हमेशा व्यक्ति को बर्बाद कर देती है। लाइफ में अकसर लोग किसी की नकल करते है। ऐसे लोग कभी तरक्की नहीं कर पाते। सिद्धू के मुताबिक हमें याद रखना चाहिए हर कुएं के पानी का स्वाद अलग होता है, सभी के फिंगर प्रिंट आपस में मेल नहीं खाते। वैसे ही किसी की नकल कर एचीवर नहीं बना जा सकता। अगर लाइफ में तरक्की करनी है तो अपनी अंतरात्मा की आवाज को सुनना चाहिए।

सिद्धू के मोटिवेशनल टिप्स

* मेहनत के अलावा सफलता का कोई शॉर्ट-कट नहीं है।
* बेइमानी से कमाया धन लाइफ में दुख ही देता है।
* शेर के मुंह में हिरण खुद चलकर नहीं आता, उसे शिकार करना पड़ता है।
* मन में निष्ठा हो तो कुछ भी असंभव नहीं है।
* हर युवा को मां-बाप का आदर करना चाहिए। बुजुर्गों का आदर न करने वालों को जिंदगी में कुछ नहीं मिलता।
* फेल होने का मन में डर नहीं होना चाहिए।
* स्वयं पर विश्वास से ही चैम्पियन या एचीवर बना जा सकता है। मेन इज नथिंग, बट माइंड इज एवरीथिंग।
* विन इज नॉट इम्पोर्टेंट, बट वांटिग टू विन इज वेरी इम्पोर्टेंट।
* क्रिएटिविटी बिना एचीवर बनना मुश्किल है।
* बहादुर अपनी विफलता के लिए दूसरों को दोषी नहीं ठहराते।

* हर बहादुर व्यक्ति मन में ठानी बात करके दिखाता है।

भाड़ में जाए गुच्ची पाजी

1985 में आस्ट्रेलिया के खिलाफ मैच में छक्का मारने की कोशिश में जीरो पर आउट होने पर कोच गुरचरण सिंह (गुच्ची पाजी) ने कहा था कि यह इंटरनेशनल क्रिकेट है। इसमें होले - होले, पोल्ले - पोल्ले, थल्ले - थल्ले खेलना पड़ता है। इसके बाद इंग्लैंड के साथ मैच में मैंने होल्ले - होल्ले, पोल्ले - पोल्ले, थल्ले - थल्ले खेलने की कोशिश की लेकिन, काफी देर तक एक भी रन नहीं बना। रन लेने के चक्कर में आऊट होते - होते बचा तो अंतरआत्मा की आवाज पहचानते हुए तह किया कि भाड़ में जाए गुच्ची पाजी, मैं तो छक्का मारूंगा। इसके बाद मैंने ऐसा छक्का मारा मानों गेंद आसमान को छूकर आई हो। इस मैच में मैंने खूब चौके - छक्के मारे। 1987 के वर्ल्ड कप में मैंने 56 छक्के मारे और ये रिकॉर्ड टूट नहीं पाया है।

दूसरा कपिल पैदा नहीं हो सकता।

नवजोत सिंह सिद्धू ने कहा कि विफलता से कभी डरना नहीं चाहिए। भारतीय टीम के पूर्व कप्तान कपिल देव से उन्होंने आत्मविश्वास की भावना सीखी थी। इंग्लिश न आने के बावजूद ब्रिटिश मीडिया का सामना करते हुए कपिल देव ने उनके सवालों का ताबड़तोड़ जवाब दिए थे। ब्रिटिश मीडिया ने जब इंग्लिश में पूछा की करोड़ो भारतीयों में से दूसरा कपिल क्यों पैदा नहीं हो पा रहा है, तो उनका जवाब था कि फादर की डेथ और मां के बुजुर्ग होने के कारण अब दूसरा कपिल पैदा होना मुश्किल है। कपिल देव की इसी बात वह काफी मोटिवेट हुए थे, और उन्होंने इस पर अमल भी किया।

तोड़ने नहीं, जोड़ने का काम करें

दूर जेकर अजे सवेरा है
इस च काफी कसूर मेरा है
मैं किवें काली रात नूं कोसां
मेरे दिल विच ही जद हनेरा है।

हमारे देशवासियों में बहुत सी अच्छाइयां है लेकिन बुराई यह है कि हम दूसरों की निंदा करने में इतना ज्यादा वक्त जाया कर देते हैं कि अपने भीतर झांकने का समय ही नहीं मिलता। असली खुशी हमसे तब तक दूर रहती है जब तक हम दूसरे के सुख में सुख और दूसरे के दुख में दुख महसूस नहीं करते। दूसरों को समझना दूसरों के प्रति संवेदनशील होना तथा अपने को दूसरों की जगह खड़ा करके सोचना बहुत जरूरी इसलिए है क्योंकि अपनी - अपनी खुशी की तलाश में लगाई गई दौड़ कभी खत्म नहीं होती और एक अंतहीन प्रक्रिया बन जाती है।

धरती को सुरक्षित और खूबसूरत जगह बनाए रखने के लिए तोड़ने की नहीं, जोड़ने की बात की जाए। साहित्य, कविताएं, कला और संस्कृति लोगों को जोड़ने का ही काम करती है। साहित्य को पवित्र इसलिए माना गया है क्योंकि इंसानी दिल की गहराइयों की आवाज यहीं से आती है। खामोश लोगों की आवाज, 'कविता' मेरे लिए धर्म और इबादत है। दुनियां में कहीं भी चले जाएं, लोग जब अनुवादित कविताओं की भी तारीफ करते हैं तो लगता है कि तमाम झगड़े, मनमुटाव और गिले - शिकवे हकीकत में बाहरी हैं और अंदर से समूची मानवता जुड़ी हुई है। कोशिश यही रहती है कि कविता के जरिये समाज को और भी ज्यादा सुंदर और तनावमुक्त बनाया जाए लेकिन मलाल इस बात का है कि टीआरपी के युग में तोड़ने वाली चीजों का प्रचार बहुत ज्यादा हो रहा है। ऐसे में कला, साहित्य, विचार और कविता की बात करने वाले टीवी चैनल की कमी बहुत खलती है।

शुभ संग्राम

श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने महोत्सव से पहले बहुत से स्थानों पर जाकर शुभ संग्राम किया। 25 अक्तूबर से 29 अक्तूबर तक डबवाली, केसूपुरा में रहकर बहुत सारी सभाएं करवाई और महोत्सव पर पहुंचने का निमन्त्रण दिया।

10 नवम्बर को फिर दोनों श्रीमान जी ने डबवाली, कल्याण जाकर संग्राम किया 17, 18, 19, 20 नवम्बर को लखनऊ में जाकर संग्राम किया और फिर श्री अकबरपुर पूजनीय भगवान देवात्मा के जन्म स्थान के दर्शन किए।

26 नवम्बर से 30 नवम्बर तक पदमपुर राजस्थान में सभाएं करवाई श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी साथ में थे।

26 नवम्बर शाम 8.30 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई, धर्म क्या है? धर्म अच्छे, नेक काम करने का नाम है, इस पर विचार किया। कई धर्म अच्छे कामों के बारे में भी विरोधी विचार रखते हैं। अच्छे कर्म वही हैं, जिससे कर्त्ता और कर्म दोनों का हित हो। पाप कर्म, धर्म नहीं, मिथ्या विश्वास धर्म नहीं, इन्हें त्याग करके धर्म का कुछ अंश प्राप्त हो सकता है।

27 नवम्बर सुबह 9 बजे :- यह सभा भी श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें वर्णन किया कि मनुष्य जीवन का सार्थक होना या व्यर्थ चले जाना, यह इस पर निर्भर करता है कि मनुष्य को पूर्वजों से कैसी पूंजी मिली है। दूसरा उसे कैसा वातावरण मिला है। देव धर्म का सत्संग वा साहित्य ऐसा विकासकारी वातावरण प्रदान करता है, जिससे मनुष्य को नई होश मिलती है, वह नये संकल्प करने के लिए मजबूर हो जाता है। इस वातावरण में पाप जीवन से घृणा वा उच्च भावों को पैदा करने के समान मौजूद हैं। इस वातावरण में अधिकारी आत्माओं के भीतर पूर्ण सच्चा वा हितकर परिवर्तन पैदा होना आरम्भ हो जाता है। इस वातावरण को पैदा करने वाले देवात्मा के देव प्रभाव हैं, जिनके मिलने से जीवन सफल वा सार्थक हो जाता है। उसके बाद कुछ परिवर्तनों का वर्णन किया।

27 नवम्बर शाम 8 बजे :- यह सभा भी उपरोक्त श्रीमान जी ने करवाई। 30 के करीब हाजरी थी। इसमें बताया गया कि नेचर को नेचर की शक्तियां चलाती हैं। वर्षा, भूचाल, तूफान आदि सब कुदरती शक्तियों का ही परिणाम हैं। मनुष्य ने नेचर की कुछ शक्तियों को जाना है, अभी और जानने का प्रयत्न जारी है। मनुष्य जो सोच, विचार वा कर्म करता है, उसके भीतर की शक्तियां ही करवाती हैं। उसकी सुख देने वाली शक्तियां ही उसकी परिचालक हैं। इस परिचालक भावों को जाने बिना मनुष्य की रक्षा वा विकास सम्भव नहीं। देवात्मा सत्गुरु के दर से यह रोशनी और बल प्राप्त होता है कि मनुष्य को नीच भाव शक्तियों से मुक्त होने की प्रेरणा मिलती है, उसके भीतर सात्विक सुख अनुरागों के पैदा करने का बल मिलता है और वह उसके लिए संग्रामशील बन जाता है। इससे वह

वास्तव में सच्चे सुखों का भागी बनता है।

28 नवम्बर 9 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि सच्ची धर्म संगत क्या होती है और कहां से मिलती है। सभापति जी ने बताया कि धर्म संगत की पहली पहचान है कि उससे हितकर ज्ञान मिलता है। कुछ अज्ञानता मिटती है। दूसरी पहचान है कि सच्ची धर्म संगत में बुराई या पाप कर्मों के लिए घृणा पैदा होती है, इनसे बचने के लिए मनुष्य ज़ोरदार प्रेरणा हासिल करता है। झूठ और पाप बुरे अनुभव होने लगते हैं। तीसरी पहचान है कि उच्च भावों से उच्च गतियां करने के लिए मन ललचाता है। भला काम करने की समर्थ्य पैदा होती है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों ने ऐसी ही धर्म संगत पैदा की है। इन्सान का सौभाग्य है कि ऐसी धर्म संगत में आए। संगत में आकर इसे परखो और लाभ उठाओ।

26 तारीख 8 बजे शाम :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि पूजा, पाठ, नाम जपना, कथा-कीर्तन धर्म नहीं हैं, जो भी साधन मनुष्य को अच्छा बनाने में सहायक नहीं होता तो वह धर्म नहीं है। देवात्मा मनुष्य के भीतर ऐसे प्रभाव संचार करते हैं कि वह नेक इन्सान बन जाते हैं। सच्ची प्रभावशाली घटनाएँ बताकर उपरोक्त सच्चाई को बहुत प्रभावशाली ढंग से पेश किया।

29 नवम्बर सुबह 9 बजे :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। हाजरीन से पूछा गया कि "हम लोग पदमपुर क्यों आते हैं?" बताया गया कि हम सब आत्मिक रोगी हैं। परन्तु बदकिस्मती से हमें अपने आत्मिक रोग नज़र नहीं आते है। X-Ray के बिना छाती के रोगों का पता नहीं लगता था। Angiography के बिना दिल की बिमारियों का ठीक ज्ञान नहीं हो सकता। उसी प्रकार जब तक आत्मा को रोशन करने के लिए ज्योति नहीं मिलती, तब तक आत्मा के रोगों को नहीं जाना जा सकता। आत्मिक जगत के सूर्य भगवान देवात्मा से पहले आत्मा के रोगों का किसी को पता नहीं था। इस ओर से मनुष्य बेसुध था। उस जन के महा सौभाग्य हैं कि जिसे अपने आत्मा की सच्ची जानकारी मिल सके, जो देवात्मा के दर के बिना कहीं से भी नहीं मिलती। यदि हम इस ओर से निश्चित हैं, मस्त है, परन्तु इसके फलों से नहीं बच सकते।

29 नवम्बर शाम 8 बजे :- यह सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें 40-50 के करीब हाजरी थी। सभापति जी ने बताया कि प्रत्येक इन्सान जीना चाहता है, मरना नहीं चाहता। दूसरा हर इन्सान सुख चाहता है, दुखी होना नहीं चाहता। परन्तु घरों, परिवारों, समाजों, देशों में दुखों की भरमार है। यह समझा जाता है कि यह दुख परमात्मा की मर्जी है या कुछ कहते हैं कि यह पिछले जन्मों का फल है। परन्तु हकीकत यह है कि मनुष्य सुख अनुरागी है, सुखों की तृप्ति में लीन होते-होते अनुचित दुखों की दलदल में फंसता जाता है। अपने लिए ही नहीं, दूसरों के लिए भी घोर दुख, हानि वा जहन्नुम पैदा करता है। काम अनुराग में अन्धा इन्सान अपनी बेटी से भी निकाह

करने का महा पाप करता है। ऐसे कुकर्मों को खुदा का हुक्म कहता है। देवात्मा ने फरमाया है कि सब मनुष्य आत्मिक रोगी हैं। जब तक मनुष्य को आत्मा नज़र नहीं आएगा, उसके रोग नज़र नहीं आएंगे, उनसे मोक्ष प्राप्त नहीं होगी, उसके लिए अवश्यक है कि वह दुखों का घर बनें और दूसरों के लिए दुखों का कारण बनें।

30 नवम्बर सुबह 9 बजे :- इस सभा में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि महापुरुष दुनियां में कोई लक्ष्य लेकर आते हैं। देवात्मा से पहले किसी का यह लक्ष्य नहीं था कि मरती हुई रुहों को बचाना है। क्योंकि तब तक यह हकीकत नज़र ही नहीं आ सकी थी। कि आत्मा का रूप क्या है? क्या वह रोगी भी होता है? इसके रोग क्या हैं? रोगी होकर आत्मा दुर्बल वा कुत्सित होता है। आखिर आत्मा की मौत हो जाती है। मरती हुई रूहों में आए सुन्दर परिवर्तनों को पेश किया। बहुत प्रभाव दायक यह सारा ब्यान था।

30 नवम्बर शाम 8 बजे :- इसमें श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि आँखें रखकर, विद्या रखकर, विद्वान होकर, धनवान वा पदधारी होकर, डाक्टर, इंजीनियर वा सांईसदान बनकर साधारणत: मनुष्य चार पक्षों में अन्धकार की अवस्था में रहता है। पहले वह दूसरों के गुणों को देखने के विचार से अन्धा है उनकी सच्चे दिल से सराहना न करके, दीन नहीं बन सकता, जबकि हकीकत यह है कि विश्व में बहुत से गुणधारियों से उस का रोज का वास्ता पड़ता है। प्रत्येक मनुष्य दूसरे मनुष्यों और अन्य उपकारियों के उपकारों का नतीजा है, पर उसे उपकारी भी नज़र नहीं आते, इस पक्ष में भी वह अन्धेरे में है। अपने आपको Self Made कहता है।

तीसरा पक्ष है कि मनुष्य को दूसरों के दुख, हानि वा अभाव नज़र नहीं आते, वह अपने सुखों की तृप्ति में ही जीवन व्यतीत करता है, उसके चारों ओर दुखी, गरीब, अनाथ, अपाहिज लोगों से दुनियां भरी हुई है। परन्तु उसके जीवन की लीला स्वै-केन्द्रित रहती है। सबसे बढ़कर अन्धेरा है, अपनी कमीयों वा गल्तियों को देखने का। मनुष्य में कमीयों की भरमार है। अपराध या पाप पूर्ण जीवन है, परन्तु वह अपने दोष नहीं देख सकता। देवात्मा की देव ज्योति मिलती है तो अपनी गल्तियां वा कमीयां नज़र आती हैं, उनसे बचने की प्रेरणाएं मिलती है। उच्च परिवर्तन शुरू हो जाता है। ऐसे परिवर्तनों के प्रभाव दायक उदाहरण पेश किए गए, जो हाजरीन के दिलों को प्रभावित कर रहे थे।

इस प्रकार चार-पांच दिन का यह संग्राम साथी सेवकों वा श्रद्धावानों के लिए बहुत हितकर रहा। महोत्सव पर आने के लिए हृदय उत्साहित हुए। वहां के सेवक सभा वा पाठ आदि मन्दिर में आकर करते हैं, जिससे वह बहुत उत्साह की हालत में रहते हैं। **(एक सेवक)**

WPP - Regd. Postal No.Pb (0078) 2006 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

पाठ और विचार विषयक वार्षिक साधनों की तालिका सम्वत् 2064 – 2065 विक्रमी (सन् 2008 ई.)

1.	माता पिता और संतान के सम्बंध में	26 जनवरी शनिवार
2.	भाई बहनों के सम्बंध में	11 फरवरी सोमवार
3.	देव समाज के सम्बन्ध में	1, 2 मार्च शनिवार, इतवार
4.	पति पत्नि के सम्बंध में	21 मार्च शुक्रवार
5.	उद्भिद् जगत् के सम्बंध में	7 अप्रैल सोमवार
6.	भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में	21 अप्रैल सोमवार
7.	वंशीय जनों के सम्बन्ध में	18 मई इतवार
8.	स्वदेश के सम्बन्ध में	14 जून शनिवार
9.	साथी सेवकों के सम्बन्ध में	17, 18 जुलाई वीरवार, शुक्रवार
10.	स्वास्तित्व के सम्बन्ध में	15, 16 अगस्त शुक्रवार, शनिवार
11.	पशु जगत के सम्बन्ध में	8 सितम्बर सोमवार
12.	परलोक के सम्बन्ध में	29 सितम्बर सोमवार
13.	स्वजाति के सम्बन्ध में	9 अक्तूबर वीरवार
14.	भौतिक जगत के सम्बन्ध में	28 अक्तूबर मंगलवार
15.	मनुष्य मात्र के सम्बन्ध में	13 नवम्बर वीरवार
16.	परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में	11, 12, 13, 14 दिसम्बर वीरवार, शुक्रवार, शनिवार, इतवार शनिवार 13 दिसम्बर विशेष दिन

नोट : 1. परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्मदिन 13 दिसम्बर 2008 ई. शनिवार।

2. साधनों के जो जो विशेष दिन किसी हिन्दू त्योहार के दिन नियत किए गए हैं, वह साधन विविध स्थानों में उसी दिन में किए जावें कि जिस दिन वह त्योहार मनाया जाये।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – देव – धर्म – मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 – डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts